हरिकथामृथसार
आरोहण तारतम्य संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे
परम भगवध्भक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

संधि सूचने:

भक्तरेनिसुव दिव्यपुरुषर
उक्ति लालिसि पेळद मुक्ता
मुक्तजीवर तारतम्यव मुनिप शांडिल्य

स्थावरर नोडल्के तृण क्रिमि
जीवरुत्तम क्रिमिगळिंदल
जावि गो गज व्याघ्र सिंहगळिंद शूद्रादि
मूवरुत्तम कमकरु भू
देवरुत्तम कमि नोडलु
कोविदोत्तम कविगळिंदलि इतिपरुत्तमरु २५-०१

धरणिपर नोडल्के नर गं
धवरुत्तम देवगंध
वर गणोत्तमरिवरिगिंत शतोनशतकोटि
परमऋषिगळु अप्सरस्त्री
यरु समानरु इवरिगिंतलि
चिरपितृगळुत्तमरु चिरनामक पितृगलिंद २५-०२

एरडैदु एंभत्तु ऋषि तुं
बुर शतोवशियप्सरस्त्री
यरु शताजानजरु उत्तम चिरपितृउगळिंद
वररु ऊवषिगिंत वैश्वा
नरन सुतरीरेंटु साविर

हरदेयरोळुत्तम कशॆरेप्पत्तुनाल्कु जन २५-०३

सरियेनिपरु व्रजौकस स्त्री
यरु सुरास्यात्मजरिगे पु
ष्करनु कमप पुष्करनिगे शनैश्चरुत्तमनु
तरणिजनिगुत्तमळुषाश्वनि
सुरररसिगुत्तम जलप बुध
शरधिजात्मजगुत्तम स्वाहादॆवियेनिसुवळु २५-०४

अनळभायळिगिंतनाख्या
तनिमिषरनाख्यातरिंदलि
घनप पजन्यानिरुद्धन स्त्री उशादेवि
द्युनदि संज्झन्या श्यामला रॊ
हिणिगळावरु समरनाख्या
तनिमिषॊत्तमरिवरिगिंतलि नूरु कमजरु २५-०५

पृथु नहुष शशिबिंदु प्रीय
व्रत परीइत नृपरु भागी
रथिय नॊडल्कधिक बल्यादिंद्र सप्तकरु
पितृगळॆळॆंटधिकवप्सर
सतियरीरैय्दोंदु मनुगळु
दितिजगुरु चावन उचथ्यरु कमजरु समर २५-०६

धनप विष्वक्सॆन गणपा
श्विनिगळॆंभत्तैदु शॆषरि
गेणेयेनिसुवरु मित्र तारा निरऋति प्रावहि
गुणगळिंदैदधिक एंभ
त्तेनिप शॆषरिगुत्तमरु स
न्मुनि मरीचि पुलस्त्य पुलह क्रतु वशिष्टमुख २५-०७

अत्रि अंगिरॆळु ब्रह्मन

पुत्ररिवरिगे समरु विश्वा
मित्र वैवस्वतरु ईशावेशबलदिंद
मित्रगिंतुत्तमरु स्वाहा
भतृ भृगुवु प्रसुति विश्वा
मित्र मोदलादवरिगिंतलि मूवरुत्तमरु २५-०८

नारदोत्तमनग्निगिंतलि
वारिनिधि पादोत्तमनु यम
तारकेश दिवाकररु शतरूपरुत्तमरु
वारिजाप्तनिगिंत प्रवह
मारुतोत्तम प्रवह
मारपुत्रनिरुद्ध गुरु मनु दअ शचि रतियु २५-०९

आरु जनगळिंदलाहं
कारिकप्राणोत्तमखिळश
रीरमानि प्राणगिंतलि काम इंद्ररिगे
गौरि वारुणि खगप राणिगे
शौरिमहिषियरोळगे जांबव
ती रमायुतळाद कारण अधिकळेनिसुवळु २५-१०

हर फणिप विहगेंद्र मूवरु
हरिमडदियरिगुत्तमरु सौ
परणिपतिगुत्तमरु भारति वाणि ईवरिगे
मरुतब्रह्मरु उत्तमरु इं
दिरेयु परमोत्तमळु लमिगे
सरियेनिसुववरिल्लवेंदिगु देश कालदोळु २५-११

श्रीमुकुम्धन महिळे लकुमिम हामहिमेगेनेम्बे
ब्र:मेशामरेम्ध्र सृष्तिस्थिथिलय गैसि अवरवर
ढामगळ कल्पिसिकोदुवळज रामरणळगिध्धु
सव स्वामि ममगुरुवेम्धुपासने माळपळच्युथन २५-१२

ईसु महिमेगळुळ्ळ लकुमि प
रेशनानंतानंतांशगुणदोळु
लेश लेशके सरियेनिसळावाव कालदलि
देशकालातीत लकुमिगे
केशवन वअस्थळवे अव
काश वायितु इवन महिमे व्याप्तिगेणेयुंटे २५-१३

ओंदु रूपदोळोंदवयवदो
ळोंदु रोमदोळोंदु देशदि
पोंदिकोंडिहरजभवादि समस्त जीविगण
सिंधुसप्तद्वीप मेरु सु
मंदराद्यादिगळु ब्रह्म पु
रंदरादि समस्तलोक परालयगळेल्ल २५-१४

सवदेवोत्तमनु सवग
सवगुणसंपूण सवद
सवतंत्र स्वतंत्र सवाधार सवात्म
सवतोमुख सवनामक
सवजनसंपूज्य शाश्वत
सवकामद सवसाइग सवजित्सव २५-१५

तारतंयारोहणव बरे
दारु पठिसुवरवर लमी
नारसिंह समस्त देवगणांतरात्मकनु
पूरयिसुव मनोरथंगळ
कारुणिक कैवल्यदायक
दूरगैव समस्तदुरितव विगतभयशोक २५-१६

प्रणत कामदनंघ्रिसंदरु
शनदपेएगळुळ्ळवगे नि

www.yousigma.com

च्चणिकेयेनिपुदु जडमोदलु ब्रह्मांत तरतमवु
मनवचनदिं स्मरिसुवर भव
वनदि शोषिसि पोगुवुदु का
रणवेनिसुवुदु ज्झन्यान भक्ति विरक्ति संपदके २५-१७

दनवे मोदलाददर सूवा
सनेयु प्रत्प्रत्येक तोपुदु एल्ल कालदलि
दनुज मानव दिविजरवरव
रनुचितोचित कम वृजिना
दननु व्यक्तव माळप त्रिगुणातीत विख्यात २५-१८

भक्तवत्सल भाग्यपुरुष वि
विक्त विश्वाधार सवो
द्रिक्त दोषविदूर दुगम दुविभाव्य स्वहि
शक्त शाश्वत सकल वेदै
कोक्त मानद मन्य माधव
सुक्त सुमस्थूल त्रिजगन्नाथ विठ्ठलनु २५-१९

www.yousigma.com